ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-4* Issue-2* May- 2019
Anthology : The Research

आधुनिक युग एवं आदिवासी वृद्ध व्यक्तियों में समायोजन

नसरीन रहमान शेख
प्राध्यापक एवं संकायाध्यक्ष,
गृहविज्ञान विभाग,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर,
शा.कन्या महाविद्यालय बड़वानी
(म.प्र.)

सारांश

आधुनिक युग में परिवारों में समायोजन की समस्या गंभीर रूप धारण करती जा रही है। यह समस्या ग्रामों की अपेक्षा शहरों में शहरों की अपेक्षा महानगरों में अधिक दिखाई दे रही है। इस अधिक प्रभाव अपेक्षाकृत वृद्ध व्यक्तियों पर अधिक हो रहा है। आदिवासी समाज के वृद्ध व्यक्ति भी इससे अछूते नही है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन आदिवासी समाज के वृद्ध व्यक्तियों में समायोजन की स्थिति देखने के लिए किया गया है। परिणामों से प्राप्त आकड़े दर्शाते है कि आदिवासी वृद्ध व्यक्तियों का समायोजन बहुत निम्न स्तर का है (P20-30)। परिणाम यह भी दर्शाते है कि आदिवासी क्षेत्र के शहरी और ग्रामीण दोनो ही पुरूषों में समायोजन निम्न स्तर का है, परतुं इनकी तुलना आदिवासी महिलाओं से करने पर ज्ञात होता है कि पुरूषों का समायोजन–स्तर महिलाओं से अधिक है,जो कि .05 विष्वसनीयता के स्तर पर सार्थक है। शहरी आदिवासी महिला–पुरूषों में भी समायोजन में सार्थक अंतर है।

मुख्य शब्द : आधुनिक युग, आदिवासी वृद्ध, समायोजन ।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के इस दौर में जब संचार माध्यमों की उपलब्धता सुलभता से प्राप्त हो जाती है, तब आदिवासी क्षेत्र भी उससे अछूता नही है, और इसका प्रभाव उसकी जीवन शैली पर भी पड़ रहा है, यद्यपि अभी भी यह उसकी जीवनशैली को महानगरों के रहवासियों की तरह प्रभावित नही कर पाया है। यह प्रसन्नता का विषय है कि अभी तक इन आदिवासी क्षेत्रों में वृद्धाश्रम की आवश्यकता अनुभव नही की गई परन्तु क्या इस क्षेत्र के वृद्ध अपने परिवार में प्रसन्नता का जीवन व्यतीत कर रहे है? संयुक्त राष्ट्र में 65 वर्ष के बाद व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर कुल व्यय का एक तिहाई व्यय करता है (बोरसन और यूनरजर, 2000); क्या वे अपने आप को ठीक से समायोजित कर पा रहे है? कुछ इसी तरह की आशंकाओं को दूर करने हेतु यह अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया

1. आधुनिक युग में आदिवासी शहरी पुरूषों में समायोजन का अध्ययन।
2. आधुनिक युग मे आदिवासी ग्रामीण पुरूषों में समायोजन का अध्ययन।
3. आधुनिक युग मे आदिवासी शहरी महिलाओं में समायोजन का अध्ययन।
4. आधुनिक युग मे आदिवासी ग्रामीण महिलाओं में समायोजन का अध्ययन।

उपकल्पना

1. आधुनिक समय में आदिवासी ग्रामीण वृद्ध पुरूषों का समायोजन आदिवासी शहरी वृद्ध पुरूषों की अपेक्षा अधिक उत्तम होगा।

2. आधुनिक समय में आदिवासी ग्रामीण वृद्ध महिलाओं का समायोजन आदिवासी शहरी वृद्ध महिलाओं की अपेक्षा अधिक उत्तम होगा।
3. आधुनिक समय में आदिवासी ग्रामीण वृद्ध महिलाओं का ग्रामीण वृद्ध पुरूषों की अपेक्षा समायोजन अधिक उत्तम होगा।
4. आधुनिक समय में शहरी वृद्ध महिलाओं का शहरी वृद्ध पुरूषों की अपेक्षा समायोजन अधिक उत्तम होगा।
1. 5. आधुनिक समय में आदिवासी वृद्ध पुरूषों की अपेक्षा आदिवासी वृद्ध महिलाओं का समायोजन अधिक उत्तम होगा।

अनुसंधान पद्धति

आधुनिक समय में जबकि प्रत्येक व्यक्ति की जीवनशैली बदल चुकी है तब कई सुदूर ऑचल के शहरों और ग्रामों में भी जीवनशैली में परिवर्तन दिखाई दे रहा क्योंकि आज ग्राम की एक छोटी सी झोपड़ी में भी टेलीविज़न और मोबाइल अवश्य उपलब्ध रहता है। यद्यपि इनका जीवन–स्तर निम्न श्रेणी का होता है। अतः इस परिवर्तित परिस्थितियों में आदिवासी व्यक्तियों का अपने जीवन साथी, परिवार एवं समाज के साथ समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन कर उनकी वास्तविक स्थिति को ज्ञात करना आवश्यक प्रतीत होता है। इन अदिवासी क्षेत्रो में वर्तमान आधुनिक युग में भी अधिकांश परिवार संयुक्त परिवार ही है, और संयुक्त परिवार के साथ ही वृद्ध व्यक्ति अपना जीवन यापन कर रहे है। अतः आदिवासी क्षेत्रो के वृद्ध व्यक्तियों का अध्ययन करने हेतु प्रस्तुत अध्ययन म.प्र. के इन्दौर संभाग के बड़वानी एवं धार जिले में किया गया। इसके अतंर्गत बड़वानी एवं धार जिले के 4 शहर एवं 16 ग्रामों का देव निर्दशन विधि द्वारा चयन किया गया।

प्रतिदर्श

आधुनिक समय में वृद्ध व्यक्तियों के समायोजन का अध्ययन करने हेतु विशेषरूप से आदिवासी क्षेत्र को चुना गया है। आधुनिक समय में आदिवासी क्षेत्र के कई गॉवों को शहर का दर्जा प्राप्त हो चुका है परंतु यह शहर अभी भी आधुनिकता की अपेक्षा ग्रामीण संस्कृति से अधिक जुड़े हुए है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु बड़वानी एवं धार जिले के शहरी क्षेत्रों से 25 वृद्ध पुरूषों एवं 25 वृद्ध महिलाओं का चयन किया गया। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों से 25 वृद्ध पुरूषों एवं 25 वृद्ध महिलाओं का चयन किया गया इस प्रकार निर्दशन हेतु कुल 100 व्यक्तियों का चयन किया गया। ये सभी व्यक्ति 50 से 65 वर्ष समुह का प्रतिनिधित्व करते है, ये सभी संयुक्त परिवार का प्रतिनिधित्व करते है। सभी ग्रामीण एवं शहरी वृद्ध व्यक्ति निम्न मध्यम आय वर्ग से है। ये सभी वृद्ध महिलायें एवं वृद्ध पुरूष सेवानिवृत है या घरेलु है।

उपकरण

आधुनिक युग में वृद्ध व्यक्तियों का समायोजन देखने हेतु शमशेद जसबीर (1995) की वृद्ध – आयु समायोजन मापनी का उपयोग किया गया। इस प्रश्नावली द्वारा वृद्ध व्यक्तियों का 6 क्षेत्रों में समायोजन अध्ययन किया गया – स्वास्थ्य, पारिवारिक, सामाजिक, वैवाहिक, संवेगात्मक एवं आर्थिक। प्राप्त आकड़ों का परीक्षण टी परीक्षण द्वारा किया गया।

परिणाम और विश्लेषण

आदिवासी शहरों और ग्रामों के आदिवासी वृद्ध व्यक्तियों के सामाजिक समायोजन से संबंधित आकड़ों से स्पष्ट होता है कि आदिवासी ग्रामीण पुरूषों का समायोजन निम्न स्तर का है इनका माध्य 64.4 है, जो कि P 20 को अभिव्यक्त करता है। इसी प्रकार शहरी वृद्ध पुरूषों का माध्य 70 है जो कि P 30 को बताता है (सारणी 1)।

इस प्रकार शहरी वृद्ध पुरूषों का समायोजन ग्रामीण वृद्ध पुरूषो की अपेक्षा अधिक है, यद्यपि उनका समायोजन स्तर भी निम्न ही है। आदिवासी वृद्ध महिलाओं से संबंधित आँकड़ो का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण महिलाओं का माध्य 62. 72 है, जो की P 30 को दर्शाता है। यह भी समायोजन के निम्न स्तर को ही दर्शाता है। इसी प्रकार शहरी वृद्ध महिलाओं का माध्य 59.12 (P 30)। इस प्रकार यह भी निम्न स्तर का समायोजन रखती है।

सारणी 1. – आदिवासी वृद्ध व्यक्तियों का समायोजन

आदिवासी वृद्ध व्यक्ति	माध्य	प्रतिशतक (P)
ग्रामीण पुरूष	64.6	20
शहरी पुरूष	70.0	30
ग्रामीण महिला	61.5	30
शहरी महिला	60.7	30

आदिवासी युग में वृद्ध पुरूषों में समायोजन

आधुनिक समय में आदिवासी वृद्ध पुरूषों का समायोजन स्तर भी निम्न स्तर का है। इस तारतम्य में जब शहरी आदिवासी वृद्ध पुरूषों की ग्रामीण वृद्ध पुरूषों से तुलना की गई तब इनमें कोई सार्थक अंतर दिखाई नही दिया क्योंकि 't' का मूल्य 1.69 है (सारणी 2)। अतः उपकल्पना आधुनिक समय में आदिवासी ग्रामीण वृद्ध पुरूषों का समायोजन आदिवासी शहरी वृद्ध पुरूषों की अपेक्षा अधिक उत्तम होगा।'' अस्वीकृत होती है। ग्रामीणों की अपेक्षा शहरी पुरूषों का माध्य कुछ अधिक है (64.24 ग्रामीण एवं 69.92 शहरी)।

सारणी 2. आदिवासी ग्रामीण–शहरी पुरूषों में समायोजन

समूह	माध्य	प्रमाप विचलन	टी
ग्रामीण आदिवासी पुरूष	64.24	15.94	–1.69
शहरी आदिवासी पुरूष	69.92	11.06	

आधुनिक युग में वृद्ध महिलाओं में समायोजन

आदिवासी वृद्ध महिलाओं की स्थिति का आकलन करने पर उनका समायोजन भी निम्न स्तर का ही है। ग्रामीण महिलाओं का माध्य 62.72 एवं शहरी महिलाओं का माध्य 59.12 है(सारणी 3)। इनका भी 't' का मूल्य 0.530 है जो कि सार्थक नही है यद्यपि शहरी महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलाऐं आशिंक रूप से समायोजन में आगे है। यहॉ भी उपकल्पना '' आधुनिक समय में आदिवासी ग्रामीण वृद्ध महिलाओं का समायोजन आदिवासी शहरी वृद्ध महिलाओं की अपेक्षा अधिक उत्तम होगा।'' अस्वीकृत होती है।

सारणी 3. – ग्रामीण–शहरी आदिवासी महिलाओं में समायोजन

समूह	माध्य	प्रमापविचलन	टी
ग्रामीण आदिवासी महिला	62.72	18.55	.530
शहरी आदिवासी महिला	59.12	13.52	

ग्रामीण समुदाय में समायोजन में लैगिंक भिन्ता

ग्रामीण समुदाय में समायोजन में लेंगिक भिन्नता की स्थिति का आकलन करने पर पुरूषों का समायोजन (माध्य 64.24) महिलाओं की अपेक्षा (माध्य 62.72) कुछ अधिक है परतु यह नही के बराबर ही है (सारणी 4)। अतः ग्रामीण समुदाय के वृद्ध आदिवासी महिला–पुरूषों में समायोजन की स्थिति समान ही है। यहॉ भी 't' का मूल्य 0.530 है जो कि सार्थक नही है।

सारणी 4. – ग्रामीण आदिवासी महिला–पुरूषों में समायोजन

समूह	माध्य	प्रमापविचलन	टी
ग्रामीण आदिवासी महिला	62.24	15.94	.475
ग्रामीण आदिवासी पुरूष	62.72	18.55	

शहरी समुदाय में समायोजन में लैगिंक भिन्नता

आधुनिक समय में जब शहरी समुदाय में वृद्ध महिला–पुरूषों की समायोजन संबधी स्थिति का आकलन किया गया तब यहॉ .01 विश्वसनीयता के स्तर पर सार्थक अंतर दिखाई देता है (t= 2.90)। यहॉ आश्चर्यजनक रूप से परिणाम यह भी दर्शाते है कि महिलाओ (माध्य 59.12) की अपेक्षा पुरूषों (माध्य 69.92) का समायोजन सार्थक रूप से अधिक अच्छा है (सारणी 5)।

सारणी 5. – शहरी आदिवासी महिला–पुरूषों में समायोजन

समूह	माध्य	प्रमापविचलन	टी
शहरी आदिवासी महिला	59.12	11.06	2.90**
शहरी आदिवासी पुरूष	69.92	13.52	

**.01विश्वसनीयता के स्तर पर सार्थक

आधुनिक युग एवं समायोजन में लैगिंक भिन्नता

आधुनिक युग में सम्पूर्ण आदिवासी समाज (शहरी + ग्रामीण) में समायोजन की स्थिति में लैंगिक भिन्नता का अध्ययन करने पर परिणाम दर्शाते है कि यद्यपि समायोजन का स्तर निम्न है। परतुं फिर भी महिला–पुरूष के समायोजन में भिन्नता है। आदिवासी महिलाओं का माध्य 60.58 है जबकि आदिवासी पुरूषों का माध्य 67.28 है (सारणी 6)। यहॉ 't' का मूल्य 2. 13 है जो कि .05 विश्वनीयता के स्तर पर सार्थक है।

सारणी 6. – आदिवासी वृद्ध पुरूष एवं आदिवासी वृद्ध महिला

समूह	माध्य	प्रमापविचलन	टी
आदिवासी पुरूष	67.28	13.76	2.13*
आदिवासी महिला	60.58	16.54	

* .05 विश्वसनीयता के स्तर पर सार्थक

सुझाव

आधुनिक युग में विश्व में कई क्रांतिया आ रही हैं जो कि व्यक्ति के जीवन शैली को भी परिवर्तित कर रही है, परंतु इस शोध अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि आदिवासी क्षेत्र में वृद्ध महिला–पुरूषों का समायोजन का स्तर निम्न है। आदिवासी पुरूषों में शहर की अपेक्षा ग्रामीण पुरूषों का समायोजन अपेक्षाकृत और निम्नस्तर का हैं इसके विपरीत महिलाओं में गॉव की अपेक्षा शहर की महिलाओं का समायोजन स्तर निम्न है।वृद्धावस्था में लैंगिक भिन्नता देखने पर परिणाम यह बता रहे हैं कि पुरूषों का महिलाओं की अपेक्षा समायोजन सार्थक रूप से अधिक उत्तम हैं।

अतः वर्तमान समय में चाहे महिला हो या पुरूष आदिवासी क्षेत्र के इन वृद्धो के समायोजन में सुधार हेतु प्रयास करना अत्यंत आवश्यक हैं इस संबंध में आदिवासी किशोरो का सुझाव है कि वृद्धो के स्वास्थ्य पर परिवार के सदस्यों को ध्यान देना चाहिए, उन्हे अकेला नही छोड़ना चाहिए, परिवार में उन्हे बोझ नहीं समझना चाहिए, वृद्धों के अनुभवों का लाभ उठाने हेतु उनके विचारो को महत्व दिया जाना चाहिए और उन्हे वृद्धाश्रम में नही रखा जाना चाहिए।

References

1. *Borson S. and Unutzer J. (2000). Psychiatric problems in the medically ill. Kaplam and Sadock's Comprehensive Textbook of Psychiatry, Vol. II(ed. B.J. Sadock and V.A.Sadock), pp. 3045-3053. Philadelphia: Lippincott, Williams and Wilkins. [Thorough review of physical illness and health utilization in later life].*
2. *Havighurst R.J. (1972). Developmental Tasks and Education, 3rd edn., 119pp. New York: Mckay.[The author details developmental tasks and aging] .*
3. *Jeffrey S. Akman, The developmental psychology of aged persons, PSYCHOLOGY – vol .II .*